

22 वर्षों का युवा झारखंड और युवाओं के सपने



प्रणय प्रबोध, संपादक

भारत में अलग राज्य की कल्पना कोई नई परंपरा नहीं। बल्कि इस परंपरा में सदियों का इतिहास छुपा है। आजाद भारत के युवाओं ने स्वतंत्रता के बाद स्वर्णिम सपने देखने शुरू किए। लेकिन देश की स्थिति में सुधार लाने के लिए विकेन्द्रीकरण की रणनीति और विकास का कौशल होना जरूरी था। यूं तो देश की आजादी से पहले भी कई महानगर और शहर थे। लेकिन उनपर मुगलों या अंग्रेजों का शासन था। 15 अगस्त 1947 को भारत के नागरिकों ने उस समय चैन की सांस ली। जब अंग्रेज देश छोड़कर चले गए। लेकिन देश में जरूरत थी विकासशील रणनीति की जो कि एक कुशल राजनेता ही कर सकता था। लेकिन किसी भी देश या राज्य के संचालन के लिए एक बेहतर नीति निर्धारण की जरूरत होती है। जिसके फलस्वरूप देश को संचालित करने के लिए पूरे भारतवर्ष में 26 जनवरी 1950 से "भारत के संविधान" को लागू किया गया। जिसमें सत्ता, शासन, प्रशासन, जनता, मानवता समेत उन तमाम विषय-वस्तुओं को जगह दी गयी। जिसकी जरूरत एक मानव प्राणी को है। इसके अतिरिक्त समय-समय पर इसमें संशोधन भी किया जाता रहा है। लेकिन जब बात विकास की आती है। तो विकेन्द्रीकरण का होना लाजमी है।

अलग राज्य की मांग

ऐसी ही एक मांग सदियों से भारतवर्ष में चली आ रही थी। खास वर्ग ने इस मांग को लेकर न जाने कई सौ सालों तक विद्रोह किया। अंग्रेजों से लोहा लिया और जल, जंगल, जमीन के संरक्षण को प्राथमिकता दी। ये और कोई नहीं बल्कि वन प्रदेश में रहने वाले वनवासी और "पुण्डरीक" देश में निवास करने वाले "आदिवासी" थे। जो कि भारत की आजादी के बाद भी बरकरार रहा। भारत की आजादी के बाद इन्होंने अपनी आवाज को बुलंद किया और 28वें राज्य की मांग की। भारत के उच्च सदन को यह महसूस हुआ कि बिहार राज्य के कुछ क्षेत्र ऐसे हैं। जहां कि भाषा, बोली, सभ्यता, संस्कृति अलग है। यहां के लोग मुख्य रूप से प्रकृति पर निर्भर नजर आए। इन तमाम विषय-वस्तुओं को देखते हुए बिहार प्रदेश से अलग होकर भारत के 28वें राज्य का निर्माण हुआ। 15 नवंबर 2000 को अलग राज्य की स्थापना हुई। इस राज्य का नाम पड़ा "झारखंड"।

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू का आगमन

झारखंड अपना 23वां सालगिरह मना रहा है। इस अवसर पर देश की पहली आदिवासी महिला राष्ट्रपति और झारखंड की पहली महिला राज्यपाल द्रौपदी मुर्मू झारखंड के राजकीय समारोह में भाग ले रही हैं। राज्य सरकार की ओर से आयोजित राजधानी राँची के मोरहाबादी मैदान में उत्सव का माहौल नजर आ रहा है। झारखंड की कला-संस्कृति को प्रदर्शित करने वाले कलाकार छऊ, पाइका और झूमर नृत्य से समा बांध रहे हैं। राज्य के

स्थापना दिवस को लेकर सभी लोगों में खुशी देखी जा रही है। लेकिन आखिर इन 22 सालों में झारखंड प्रदेश कहां पहुंचा? क्या इसने तरक्की की? क्या सरकार का सहयोग प्राप्त हुआ? क्या आम नागरिकों के हालात में सुधार आए? ऐसे प्रश्नों का उठना लाजमी है। क्योंकि जिस उद्देश्य से अलग राज्य का निर्माण हुआ। उस उद्देश्य की पूर्ति न हो, तो यह विफलता को दर्शाती है। लेकिन इन 22 सालों में राज्य का विकास नहीं हुआ, यह भी कहना सही नहीं।

झारखंड निर्माण के बाद इन 22 वर्षों में कई सरकारें आयीं और गयीं। अबतक के शासन काल में केवल एक सरकार ने अपना कार्यकाल पूरा किया। कई मुख्यमंत्री बदल गए, कई बार राज्य में राष्ट्रपति शासन लगाए गए। राज्य की जनता ने मांगों को लेकर सरकार से गुहारें लगायीं। कई मांगें पूरी हुईं, तो कई मांगें कागजों में सांसे ले रही हैं। लेकिन इन सब के बीच राज्य के विकास की बात की जाए। तो हमें पता चलेगा कि भले ही राज्य के नागरिकों का सर्वांगीण विकास नहीं हुआ। लेकिन 22 वर्षों के युवा झारखंड का विकास जरूर हुआ है। चाहे वह राज्य सरकार के स्तर हो या भी केन्द्र सरकार के स्तर से।

इंफ्रास्ट्रक्चर

किसी भी राज्य के विकास के लिए सबसे जरूरी उसके इंफ्रास्ट्रक्चर का होना है। इंफ्रास्ट्रक्चर के अंतर्गत सड़क से लेकर शौचालय तक के सुविधा की व्यवस्था से है। सरकारी भवनों से लेकर ग्रामीण विद्युतिकरण तक है। अगर सड़क की बात करें, तो शायद ही कोई ऐसा जिला हो। जो मुख्य पथ से न जुड़ा हो, शायद ही कोई ऐसा शहर हो, जहां मार्केट प्लेस न बना हो, शायद ही कोई ऐसा नगर हो, जहां बिजली की समुचित व्यवस्था न हो। शायद ही कोई ऐसा परिवार हो, जिसके पास राशन कार्ड उपलब्ध न हो। लेकिन इन सबके बावजूद झारखंड राज्य पीछे है। लेकिन किस मायने में ? यह बड़ा सवाल है। आवश्यकताएं

सड़कों तो हैं, लेकिन राज्य के ग्रामीण इलाकों में पहुंच पथ का अभाव है। जिसके कारण कई सुदूरवर्ती क्षेत्र के लोग पगडंडी के सहारे कई किलोमीटर की दूरी तय कर बाजार का रुख करते हैं। जमीन के अंदर पानी तो है, लेकिन चापाकल, नलकूप और जलापूर्ति योजनाओं में मनमानी के कारण ग्रामीणों को स्वच्छ पेयजल नसीब नहीं। राशन कार्ड की रिक्तियां तो हैं, लेकिन करप्ट सिस्टम के कारण कई ऐसे परिवार हैं, जिनके पास राशन कार्ड नहीं। वहीं कई ऐसे परिवार हैं, जिनकी आय गरीबी रेखा से ऊपर है, लेकिन वो गरीबों का हक छिनकर राशन कार्ड का उपभोग कर रहे हैं। प्राथमिक, सामुदायिक और जिला अस्पताल तो हैं, लेकिन चिकित्सा व्यवस्था के अभाव में लोग दम तोड़ रहे हैं। गांव-गांव में प्राथमिक स्कूल, माध्यमिक स्कूल और हाई स्कूल तो हैं। लेकिन शिक्षकों और उपकरणों के अभाव में सरकारी स्कूल में पढ़ने वाले बच्चे स्कूल से दूर भाग रहे हैं। किसानों के पास कृषि योग्य जमीन तो है, लेकिन सिंचाई के साधन के अभाव में खेत परती रह जाते हैं। इन 22 सालों में राज्य का विकास तो हुआ, लेकिन कुछ मूलभूत

ऐसी हैं, जिसके लिए सरकारी उपक्रमों को मजबूत करना जरूरी है। ताकि राज्य के नागरिकों, युवाओं और भविष्य के सर्वांगीण विकास हो सके।

ग्रामीण अगर अपने पैसे लगाकर गांव में कोई कारोबार करता है, तो सरकार की ओर से उसे उसके उत्पाद बेचने में सहयोग करना चाहिए। चाहे वह ट्रांसपोर्टेशन के जरिए हो या फिर सामानों के आपूर्ति



युवाओं के सपने

झारखंड राज्य के युवा बस इंतजार, इंतजार और इंतजार ही करते रह जायेंगे। क्योंकि सही समय न जाने कब आएगा। ऐसा सिर्फ इसलिए क्योंकि 22 साल के युवा झारखंड में अबतक न तो स्थानीय नीति बनी है और न ही नियोजन नीति पर मुहर लगी है। कमरे में बंद होकर किताबों और पन्नों के बीच सिमटी युवाओं की जिंदगी में कोरेपन के अलावा कुछ और नहीं बचा। राज्य के लाखों युवा सरकारी परीक्षा की तैयारी कर रहे हैं। भविष्य के सपनों को साकार करने के लिए युवा खुली आंखों से सपने देख रहे हैं।

कभी इन युवाओं के रूम की ओर रुख करो साहब, तो में स्टडी टेबल और गैस के ऊपर चढ़ा कुकर नजर आएगा। कुकर में चावल का दाना हो, न हो, लेकिन पेट काटकर ये युवा दो किताबें और तीन कलम जरूर खरीद आते हैं। किताबों

के पन्नों पर उकेरी आड़ी-तिरछी लकीरों को जबतक देख न लेते, इन्हें नींद नहीं आती। आंख भले ही लाल हो जाए, आंखों के नीचे गड्डे हो जाएं, आंखों के नीचे कालापन क्यों न पड़ जाए? लेकिन ये संघर्ष करना नहीं छोड़ते। क्योंकि एक विद्यार्थी जब विद्या का अर्थ जान लेता है, तो उसे दुनिया में पुरस्कृत, पेन और पेंसिल के अलावा कुछ नजर आता है, तो वह है उसका सुनहरा भविष्य। सरकारें इन युवाओं को रोजगार उपलब्ध कराने की बातें तो करती हैं। लेकिन नौकरी से इंकार कर जाती हैं। कभी इन शिक्षित युवाओं को पकौड़े तलने के लिए कहा जाता है, तो कभी अंडा और मुर्गी बेचने की सलाह दी जाती है। साहब ये शिक्षित युवा आज भी चीख-चीख कर यही कह रहे हैं कि हमें रोजगार नहीं, हमें नौकरी दो।

सरकारी उपक्रमों के निजीकरण से बढ़ी बेरोजगारी

युवाओं ने जिन्हें सत्ता पर बिठाया है। उन सत्तासीन जनप्रतिनिधियों से युवाओं को उम्मीदें हैं। कुछ नहीं तो न सही, लेकिन महंगाई के इस दौर में चार वक्त का भर पेट भोजन कर पाए। इसके लिए रुपए का जुगाड़ जरूरी है। लेकिन जीवन भर ये चार पहर की रोटी का जुगाड़ हो, इसके लिए स्थायी नौकरी की जरूरत है। वर्तमान समय में मंत्रालयों और विभागों में हजारों पद खाली हैं। लेकिन उन पदों पर रिक्तियां नहीं निकाली जा रहीं। रिक्तियां निकाली भी जा रही, तो टेंडर के जरिए। वह टेंडर किसी निजी कंपनी के हाथों में चली जाती है और फिर शुरू होता है असुरक्षित रोजगार का सफर। मरता क्या नहीं करता? इसलिए रोजगार की तलाश कर रहे युवा चंद दिनों के लिए चंद रुपए की तलाश में ऐसी कंपनियों की ओर रुख करते हैं। जहां उनका भविष्य सुरक्षित नहीं। सरकार की ओर से टेंडर एक्सटेंड हुआ तो ठीक और अगर नहीं हुआ, तो फिर जिंदगी की गाड़ी जहां से शुरू हुई थी। फिर वहीं लौट आती है। समय के साथ उम्र बीतता चला जाता है और इन युवाओं के हाथ लगती है, तो सिर्फ बेरोजगारी।

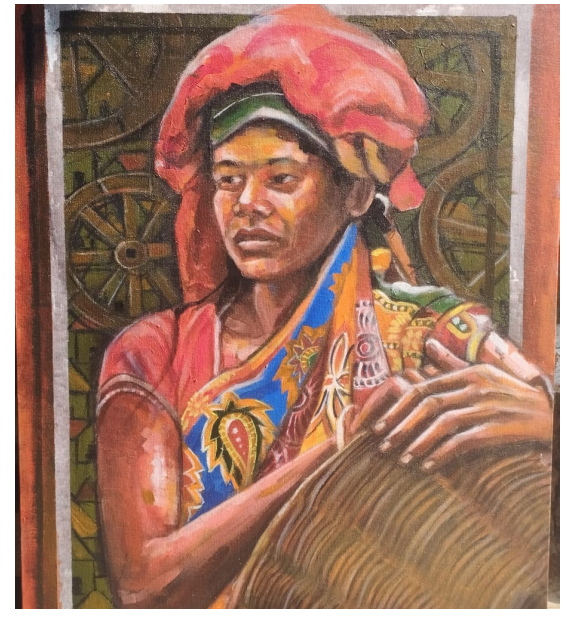
राज्य के नवनिर्माण में युवाओं की भूमिका अहम होती है। लेकिन समय के साथ युवाओं को अवसर न मिले, तो इनका पथभ्रष्ट होना कोई बड़ी बात नहीं। इसलिए भारतीय संविधान के अनुच्छेद 16 के मुताबिक हर युवा को लोक नियोजन के विषय में अवसर की समानता दिया जाना जरूरी है। लोक कार्य में कार्यशील कार्यालयों में सुचारु रूप से लोकहित का काम हो सके। इसके लिए कार्यालयों में समुचित मानव संसाधन का भी होना जरूरी है। समुचित मानव संसाधन होने से जहां एक ओर लोकहित का काम आसानी से कम समय में हो जाएगा, वहीं राज्य और देश में बेरोजगारी दर में स्वतंत्र कमी आएगी। सरकार केवल सरकारी कार्यालयों में ही पद का सृजन न करे, बल्कि अधिक से अधिक युवाओं को रोजगार का अवसर देने के लिए एक बेहतर नीति का निर्धारण भी करना जरूरी है।

क्र.स.	चित्र	नाम	चुनाव क्षेत्र	कार्यकाल			विधानसभा चुनाव	पार्टी
01		बाबूलाल मरांडी	रामगढ़	15 नवम्बर 2000	18 मार्च 2003	2 साल 123 दिन	1st 2000	BJP
02		अर्जुन मुंडा	खरसावां	18 मार्च 2003	02 मार्च 2005	01 साल 349 दिन		BJP
03		शिबू सोरेन	—	02 मार्च 2005	12 मार्च 2005	10 दिन	2nd 2005	JMM
04		अर्जुन मुंडा	खरसावां	12 मार्च 2005	19 सितंबर 2006	01 साल 191 दिन		BJP
05		मधू कोडा	जगरनाथपुर	19 सितंबर 2006	27 अगस्त 2008	1 साल 343 दिन		
06		शिबू सोरेन	—	27 अगस्त 2008	19 जनवरी 2009	145 दिन		JMM
07		राष्ट्रपति शासन	—	19 जनवरी 2009	30 दिसंबर 2009	345 दिन		S
08		शिबू सोरेन	जामताड़ा	30 दिसंबर 2009	01 जून 2010	153 दिन	3rd 2009	JMM
09		राष्ट्रपति शासन	—	01 जून 2010	11 सितंबर 2010	102 दिन		
10		अर्जुन मुंडा	खरसावां	11 सितंबर 2010	18 जनवरी 2013	2 साल 129 दिन		BJP
11		राष्ट्रपति शासन	—	18 जनवरी 2013	13 जुलाई 2013	176 दिन		
12		हेमंत सोरेन	दुमका	13 जुलाई 2013	28 दिसंबर 2014	1 साल 168 दिन		JMM
13		रघुवर दास	पूर्वी जमशेदपुर	28 दिसंबर 2019	29 दिसंबर 2019	5 साल 1 दिन	4th 2014	BJP
14		हेमंत सोरेन	बरहेट	29 दिसंबर 2019	अबतक	2 साल —दिन	5th 2019	JMM

Artists of Jharkhand



महावीर शामी, धनबाद



Pawan Kumar, Class II, RH Public School, Burhakhap, Ramgarh, Jharkhand



मनीष कुमार महतो, तमाड़, रांची



आर्थिक रूप से कमजोर सामान्य वर्ग के संरक्षण का आधार बना EWS आरक्षण



भारत की जनसंख्या को जातिगत और आर्थिक आधार पर मुख्य रूप में चार भागों में वर्गीकृत किया गया है, जिनमें मुख्य रूप से सामान्य वर्ग, अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और अन्य पिछड़ी जाति आते हैं. सामान्य वर्ग को छोड़कर प्रणय प्रबोध, संपादक अन्य वर्ग के अंतर्गत आने वाली जातियों को केन्द्र और राज्य सरकार के स्तर से आरक्षण का लाभ दिया गया था. लेकिन आर्थिक रूप से कमजोर सामान्य वर्ग के लोग आरक्षण का लाभ लेने से वंचित थे. वर्तमान की भारत सरकार याने कि नरेन्द्र मोदी की सरकार ने वर्ष जनवरी 2019 को लोकसभा में संविधान संशोधन बिल लाकर सवर्णों के लिए 10 प्रतिशत आरक्षण दिया... लेकिन भारत के सर्वोच्च न्यायालय में इसे चुनौती दी गयी. जबकि संविधान के 103वें संशोधन के जरिए अनुच्छेद 15 (6) और 16 (6) को जोड़ा गया था. इसके



जरिए सरकार को यह अधिकार दिया गया था कि वह आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के लोगों के उत्थान के लिए विशेष व्यवस्था बना सके.

SC के पांच जजों के बैच में सुनाया गया फैसला

EWS मामले में सुप्रीम कोर्ट के पांच जजों की खंडपीठ ने फैसला सुनाया है. जिनमें मुख्य रूप से न्यायाधीश

जस्टिस दिनेश माहेश्वरी, जस्टिस बेला त्रिवेदी, जस्टिस जेबी पारदीवाला, जस्टिस यूयू ललित और जस्टिस रविंद्र भट्ट शामिल रहे. हालांकि इनमें से तीन जजों का निर्णय EWS के पक्ष में रहा. वहीं दो जजों ने निर्णय पर अस. हमति जतायी है. जस्टिस दिनेश माहेश्वरी, जस्टिस बेला त्रिवेदी और जस्टिस जेबी पारदीवाल ने EWS के समर्थन में फैसला सुनाया है. वहीं जस्टिस यूयू ललित और जस्टिस रविंद्र भट्ट ने EWS आरक्षण पर अपनी असहमति जाहिर की है.

जस्टिस बेला त्रिवेदी ने फैसले पर सहमति जताते हुए कहा कि मैं माहेश्वरी के निष्कर्ष से सहमत हूँ. एससी/एसटी/ओबीसी को पहले से आरक्षण मिला हुआ है. उसे सामान्य वर्ग के साथ शामिल नहीं किया जा भी यह जारी है.

जस्टिस रविन्द्र भट्ट ने कहा कि आबादी का एक बड़ा हिस्सा एससी/एसटी/ओबीसी है. उनमें बहुत से लोग गरीब हैं. इसलिए 103वां संशोधन गलत है. जस्टिस रविन्द्र

भट्ट ने 50 प्रतिशत से ऊपर आरक्षण देने को गलत माना है. उन्होंने कहा कि अनुच्छेद 15 (6) और 16 (6) रद्द होना चाहिए.

जबकि, **चीफ जस्टिस ललित** ने भी आर्थिक आधार पर आरक्षण का विरोध किया है. उन्होंने कहा कि मैं रविन्द्र के फैसले से सहमत हूँ. यानी सुप्रीम कोर्ट ने 3-2 के बहुमत से E आरक्षण बरकरार रखा है. इस मामले पर कोर्ट ने E कोटे की वैधता को चुनौती देने वाली 30 से अधिक याचिकाओं पर सुनवाई के बाद 27 सितंबर को अपना फैसला सुरक्षित रख लिया था.

याचिकाकर्ताओं की दलील

याचिकाकर्ताओं ने दलील दिया है कि आरक्षण का मकसद सामाजिक भेदभाव झेलने वाले वर्ग का उत्थान था, अगर गरीबी के आधार पर था, तो उसमें एससी-एसटी-ओबीसी को भी जगह मिले. ईडब्ल्यूएस कोटा के खिलाफ दलील देते हुए कहा कि ये 50 फीसदी आरक्षण की सीमा का उल्लंघन है.

सरकार का पक्ष

सरकार की ओर से पक्ष रखते हुए कहा गया कि ईडब्ल्यूएस तबके को समानता का दर्जा दिलाने के लिए ये व्यवस्था जरूरी है. केन्द्र सरकार की ओर से कहा गया कि इस व्यवस्था से आरक्षण पा रहे किसी दूसरे वर्ग को नुकसान नहीं है. साथ ही 50 प्रतिशत की जो सीमा कही जा रही है, वो कोई संवैधानिक व्यवस्था नहीं है, ये सुप्रीम कोर्ट के एक फैसले से आया है, तो ऐसा नहीं है कि इसके परे जाकर आरक्षण नहीं दिया जा सकता.

EWS आरक्षण का कहा मिलेगा लाभ

आर्थिक रूप से कमजोर सामान्य वर्ग के भारतीय नागरिक. E को EWS के आरक्षण का लाभ मुख्य रूप से लोक नियोजन और उच्च शिक्षा में प्राप्त हो सकेगा. जो कि जनवरी 2019 से भारत में लागू है. उन्हीं प्रावधानों के तहत ईडब्ल्यूएस आरक्षण के लाभ मिलते रहेंगे. लाभ पाने की अर्हता भी वही होगी, जो पूर्व में केन्द्र सरकार की ओर से निर्धारित की गयी है.

संस्कृति के संरक्षण में कला का योगदान



यू तो अपनी कला और संस्कृति से सभी को प्रेम है. सभी इनका संरक्षण भी करना चाहते हैं. लेकिन संस्कृति का संरक्षण कैसे किया जाए? यह बड़ा सवाल नजर आता है. अगर बात झारखंड के परिप्रेक्ष्य में की जाए, तो हम देखेंगे कि झारखंड में निवास करने वाले अलग-अलग वर्ग की भाषा, बोली, खान-पान, रहन-सहन सबकुछ अलग नजर आएगा. लेकिन इन सभी को जीवित रखने में कला सहायक नजर आता है. हम हर रोज अपने विच. राों को अभिव्यक्त करते हैं. ये विचार हमारे अंदर हमारे परिवेश के अनुभव से आते हैं. जो हमें काम करने के लिए उत्पुक्त करते हैं. जिस सकारात्मक काम को हम करते हैं, वह हमारी संस्कृति का हिस्सा बन जाती है. लेकिन उसके संरक्षण के लिए हम कला की सहायता लेते हैं.

झारखंड के परिप्रेक्ष्य में

झारखंड के ग्रामीण इलाकों में झांक कर देखें. तो हमें पता चलेगा कि खेती, पर्व, त्योहार, रहन-सहन के दौरान अलग-अलग संस्कृतियां नजर आएंगे. यहां तक कि विवाह सहित 16 संस्कार में अलग-अलग वर्ग में अलग-अलग संस्कृति देखने को मिलेगी. झारखंड राज्य की बात की जाए, तो मुख्य रूप से यहां निवास करने वाले आदिवासियों और महतो समाज के लोगों की संस्कृति हमें अपनी ओर आकर्षित करती है. क्योंकि झारखंड में विभिन्न तरह के आदिवासी निवास करते हैं. जिनकी अलग-अलग बोलियां और भाषाएं हैं. कहीं सादरी बोली

जाती है, तो कही नागपुरी, कहीं पंचपरगनिया बोली जाती है, तो कहीं हो और मुंडारी की छटा नजर आती है. महतो समाज के लोगों की बात करें. वो खोरठा भाषा को प्राथ. मिकता देते हैं. लेकिन राज्य के विभिन्न जिलों में भ्रमण करेंगे, तो हमें पता चलेगा कि सभी जगहों पर अलग-अलग खोरठा भाषा का प्रयोग होता है. धनबाद और बोकारो में अलग, रामगढ़-रांची में अलग, हजारीबाग-गिरिडीह में अलग तरह से खोरठा भाषा बोली जाती है.

कला और संस्कृति में संबंध

लेकिन इन्हें हम लोगों के सामने कैसे परोसे कि वे इस ओर आकर्षित हों? इसके लिए हम कला की विभिन्न विधाओं का प्रयोग करते हैं. कठपुतली, छऊ, पाइका, झूमर समेत कई नृत्य के प्रस्तुतियों के माध्यम से लोगों को संस्कृति से जोड़ते हैं. इसके अलावा संस्कृति को लोगों के सामने नाटक, नृत्य नाटिका, चित्रकला, सिनेमा, फोटा. ग्राफी, संगीत और अन्य कलाओं के माध्यम से परोसने का काम करते हैं. इतना ही नहीं सोहराय, कोहवार, सामानों में आकृतियां उकेर कर संस्कृति को जीवित रखने का प्रयास करते हैं.

इसलिए हम कह सकते हैं कि संस्कृति के संरक्षण में कला का अहम योगदान है. हम अपने निजी जीवन में जो कुछ भी करते हैं. वे सभी काम हमारी संस्कृति के परिचायक हैं. संस्कृति को दर्शाने के लिए जिस उपकरण का सहारा लिया जाता है. उसे हम कला की संज्ञा देते हैं. कला के जरिए हम अपनी बातों को लोगों के सामने आसानी से प्रदर्शित कर पाते हैं और लोग इसकी अनुभूति कर जीवनशैली को आसान बनाते हैं.

हैंगिंग पिलर टेम्पल "लेपाक्षी मंदिर"

किरण कुमारी

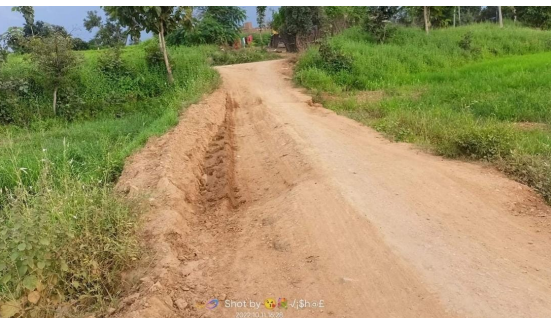
राँची : भारत मंदिरों का देश भी है क्योंकि यहां इतने मंदिर हैं कि आप गिनते-गिनते थक जाएंगे। हमारे देश में ऐसे कई मंदिर हैं, जो अपनी भव्यता और अनोखी मान्यताओं के लिए जाने जाते हैं, ऐसा ही एक अनोखा मंदिर आंध्र प्रदेश के अंतर्गतपुर जिले में भी है। इस मंदिर की सबसे खास और रहस्यमय बात यह है कि इसका एक खंभा हवा में लटका हुआ है, लेकिन इसका रहस्य आज तक कोई नहीं जान पाया है। इस मंदिर का नाम है लेपाक्षी मंदिर, जिसे हैंगिंग पिलर टेंपलर के नाम से भी जाना जाता है, इस मंदिर में कुल 70 खंभे हैं, जिसमें से एक खंभे का जमीन से जुड़ाव नहीं है। वो रहस्यमयी तरीके से हवा में लटका हुआ है... लेपाक्षी मंदिर के अनोखे खंभे आकाश स्तंभ के नाम से भी जाने जाते हैं, इसमें एक खंभा जमीन से करीब आधा इंच ऊपर उठा हुआ है। ऐसी मान्यता है कि खंभे के नीचे से कुछ निकाल लेने से घर में सुख-समृद्धि आती है... यही वजह है कि यहां आने वाले लोग खंभे के नीचे से कपड़ा निकालते हैं...कहा जाता है कि मंदिर का खंभा पहले जमीन से जुड़ा हुआ था, लेकिन एक ब्रिटिश इंजीनियर ने यह जानने के लिए कि यह मंदिर पिलर पर कैसे टिका हुआ हुआ है, इसको हिला दिया, तब से ये खंभा हवा में ही झूल रहा है. इस मंदिर में इष्टदेव भगवान शिव के रूप वीरभद्र हैं वीरभद्र महाराज दक्ष के यज्ञ के बाद अस्तित्व में आए थे, इसके अलावा यहाँ भगवान शिव के अन्य रूप अर्धनारीश्वर, कंकाल मूर्ति, दक्षिणमूर्ति और त्रिपुरातकेश्वर भी मौजूद हैं, यहां विराजमान माता को भद्रकाली कहा जाता है...कुमा. 'सेलम की पहाडियों पर बना ये मंदिर कछुए की आकार

में बना है,कहा जाता है कि इस मंदिर का निर्माण विरुपन्ना और विरन्ना नाम के दो भाइयों ने 16वीं सदी में कराया था, जो विजयनगर के राजा के यहां काम करते थे...पौराणिक मान्यता है कि इस मंदिर को ऋषि अगस्त्य ने बनवाया था भारत के इस अनोखे मंदिर का हवा में लटका है एक खंभा, आज भी है वैज्ञानिकों के लिए रहस्य मान्यताओं के अनुसार, इस मंदिर का जिक्र रामायण में भी मिलता है और ये वही जगह है, जहां जटायु रावण से युद्ध करने के बाद जखमी होकर गिर गये थे और राम को रावण का पता बताया था.. मंदिर में एक बड़ा सा पैर का निशान भी है, जिसे त्रेता युग का गवाह माना जाता है, कोई इसे भगवान राम के पैर का निशान तो कोई माता सीता के पैर का निशान मानते हैं. मंदिर को लेकर बताया जाता है कि 70 खंभे वाला यह मंदिर उस एक झूलते हुए खंभे को छोड़कर बाकी के 69 खंभे पर होगा, इसलिए एक खंभे के हवा में झूलने से कोई फर्क नहीं पड़ता होगा। लेकिन कहा जाता है कि अंग्रेजी हुकूमत के दौरान ब्रिटिश इंजीनियर हैमिल्टन ने भी कुछ यही थ्योरी दी थी.... कहा जाता है कि वर्ष 1902 में उस ब्रिटिश इंजीनियर ने मंदिर के रहस्य को सुलझाने की तमाम को. शिशों कीं, इमारत का आधार किस खंभे पर है ये जांचने के लिए उस इंजीनियर ने हवा में झूलते खंभे पर हथौड़े से भी वार किए.. उससे तकरीबन 25 फीट दूर स्थित खंभों पर दरारें आ गई इससे यह पता चला कि मंदिर का सारा वजन इसी झूलते हुए खंभे पर है...इसके बाद वह इंजीनियर भी मंदिर के झूलते हुए खंभे की थ्योरी के सामने हार मानकर वापस चला गया

कीचड़ व गड्डे में तब्दील हुवा कुन्दा-प्रतापपुर सड़क, आवागमन में हो रही परेशानी

विनोद कुमार

कुन्दा(घतरा): किसी भी गाँव की सूरत और सीरत तभी बदल सकती है जब मूलभूत सुविधाओं से परिपूर्ण हो।इसी मुख्य सुविधाओं में से एक सड़क भी आती है।बतावें की कुन्दा से प्रतापपुर सड़क का निर्माण कार्य पिछले डेढ़ वर्षों से चल रहा है।लेकिन संवेदक के सुस्त रवैये के कारण सड़क का निर्माण कार्य पूर्ण नहीं हो सका है।महज 12 किलोमीटर सड़क का निर्माण में काफी अनियमितता व घोर लापरवाही बरती गई है। बताया जाता है कि उक्त सड़क लगभग 5 करोड़ 41 लाख की लागत से रमेश राम कंस्ट्रक्शन के द्वारा निर्माण करवाया जा रहा है।सड़क का निर्माण कार्य प्रारंभ किए लगभग एक वर्ष आठ महीने बीत जाने के बाद भी कार्य पूर्ण नहीं किया गया है। योजना बोर्ड में अंकित कार्य प्रारंभ तिथि 31-12-2020



व पूर्ण तिथि 30-12-2021 से साफ साफ जाहिर हो रहा है कि संवेदक के द्वारा घोर लापरवाही बरती गई है। सड़क में नाम मात्र के डस्ट डाला गया है। जिससे कई जगह कीचड़ व गड्डों में तब्दील हो गया है।अब तो बरसात खत्म होते ही एका दूका गाड़ियों की आवागमन से सड़क पर धूल गर्दा से भर जाता हैं।सफर करने वाले छोटे



परवाही बरतने के कारण फटकार भी लगाई थी।लेकिन फिर भी श्रीमान लापरवाही से बाज नहीं आ रहे हैं।और तो और लापरवाही यही तक समाप्त नहीं हुवी है 12 किलोमीटर की निर्माणाधीन सड़क में कई जगहों पर गड्डे में तब्दील हो चुकी है।अब आप अनुमान लगा सकते हैं की

गाड़ियों का रास्ता साफ से दिखाई नहीं देता।जिसके कारण कई छोटे बड़े दुर्घटना प्रतिदिन हो जाती हैं। सड़क गड्डों में तब्दील होने से आए दिन कई वाहन फँस जाते हैं। वही तत्कालीन उपायुक्त ने संवेदक को कार्य में ला. परवाही बरतने के कारण फटकार भी लगाई थी।लेकिन फिर भी श्रीमान लापरवाही से बाज नहीं आ रहे हैं।और तो और लापरवाही यही तक समाप्त नहीं हुवी है 12 किलोमीटर की निर्माणाधीन सड़क में कई जगहों पर गड्डे में तब्दील हो चुकी है।अब आप अनुमान लगा सकते हैं की

की कितनी गुणवत्ता की ख्याल रखी गई है।दरअसल आये दिन छोटी बड़ी वाहनों की कीचड़ व गड्डे में फंसना आम बात सी हो गई है।या तो वाहन मालिकों को घंटो मशक्कत करना पड़ता है या फिर जेसीबी की मदद से वाहनों को निकाला जाता है।वही गाड़ियों की लंबी लाइमें लग गई तथा आने-जाने में कई राहगीरों को परेशानियों का सामना करना पड़ा।वहीं कई गाड़ियां वापस घूम कर लंबी दूरी तय किया करती है। ग्रामीणों ने इसकी शिकायत कई बार विभाग को भी किया है तथा कुछ दिन पूर्व भी व वर्तमान उपायुक्त को भी किया है।अब देखना दिलचस्प होगा की लापरवाह संवेदक पर जिला प्रशासन क्या कुछ कार्रवाई करती है।

या फिर संवेदक को कुंभकर्णी नौद में सोने दिए जाने का लाईसेंस मिल चुका है।आखिर राहगीरों व प्रखंडवासियों से कैसा मजाक,वही प्रखंडवासियों व जनप्रतिनिधियों में संवेदक के प्रति काफी रोष है,जल्द निर्माण कार्य पूर्ण नहीं किया गया तो आंदोलन का रुख अख्तियार किया जाएगा। वहीं चतरा के लोकप्रिय विधायक सह झारखंड सरकार के श्रम, नियोजन एवं प्रशिक्षण मंत्री सत्यानंद भोक्ता को ग्रामीणों ने पुनः 31 अक्टूबर 2022 को अवगत कराया गया था।जिसपर माननीय मंत्री जी ने कहा कि संवेदक यदि जल्द कार्य प्रारंभ नहीं किया तो संवेदक का लाइसेंस रद्द किया जाएगा। अब देखना दिलचस्प होगा कि आखिर इस पर संवेदक लापरवाह है या सरकार।या तो माने इस सरकार के कार्यकाल में सभी विभागीय अधिकारी हाथ में हाथ रखे बैठे हैं।ग्रामीणों के आवाजों का कोई असर नहीं दिखता।



पर्यटकों की आस में पंचघाघ जलप्रपात

ओम प्रकाश कुमार

हम सभी को कुछ ऐसी जगहों की तलाश रहती है, जो भीड़भाड़ से दूर हमारे मन और मिजाज के अनुकूल और खूबसूरत हो। एक ऐसी ही जगह है पंचघाघ, जिसको प्राकृतिक वातावरण और आसपास की पहाड़ियों की खूबसूरती के लिए जाना जाता है। खूंदी स्थित यह जगह पर्यटकों के लिए क्यों बन रही है खास ?

आगे पढ़िये...

झारखण्ड एक सुंदर प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक धरोहरों को अपने आँचल में समेटे है। यहाँ अनेकों मंदिर, झरने, डैम और पर्यटन स्थल हैं। लेकिन सिर्फ खूंदी जिले की बात करें तो एक से बढ़कर एक पर्यटन स्थल और वाटर फॉल हैं। इनमें पेरवाघाघ जल प्रपात, लटरजंग डैम, रानी फॉल, बाबा आग्नेश्वरधाम, उलिहातू, सोनमेर माता मंदिर, डोम्बारीबुरु, पेलोल डैम शामिल हैं। उन्ही में से एक है — पंचघाघ जलप्रपात हैं जो खूंदी के घने जंगलों और प्राकृतिक छटाओं के बीच अवस्थित हैं। इन्ही प्राकृतिक छटाओं के बीच यह जलप्रपात राँची से करीब 55 किमी दूर और खूंदी जिला मुख्यालय से महज 15 किलोमीटर दूर राची-चाईबासा मुख्य मार्ग से डेढ़ किलोमीटर पश्चिम दिशा में स्थित बनई नदी की पांच धाराओं से बना पंचघाघ जलप्रपात एक सुंदर और मनोरम स्थल है। हालांकि पानी

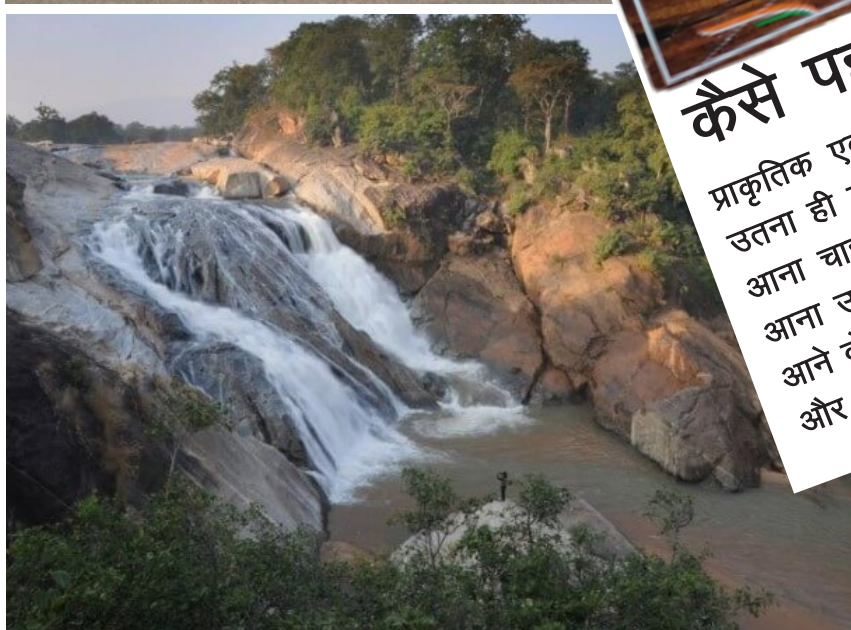


ज्यादा ऊँचाई से नहीं गिरता, फिर भी चारों तरफ जंगल और पहाड़ों से घिरा यह जलप्रपात काफी आकर्षक लगता है। पाँच धाराओं से छल-छल, कल-कल करते पथरों से टकराती धाराओं की गर्जन को सुना जा सकता है।

पंचघाघ फॉल (Panchghagh Fall) का नामकरण बनई नदी पर स्थित प्रकृतिक सौंदर्य से घिरा, पाँच अलग-अलग धाराओं से पत्थरों से टकराते हुए गिरती है। यहां पर बड़े-बड़े कठोर और दांतेदार चट्टानें होने के कारण बनई नदी अपना रास्ता खोजने के लिए, खुद को पांच अलग-अलग धाराओं में बांटती है। अलग-अलग धाराओं से जो आवाज़ निकलती है तो ऐसा प्रतीत होता

है मानो प्राकृतिक अपनी आवाज़ में सुन्दर मधुर गीत गा रही हो। कारण यही है कि यह जलप्रपात पंचघाघ जलप्रपात के नाम से जाना जाता है।

यह जलप्रपात चारों तरफ से साल (सखुआ) और पलास के घने जंगलों के बीच अपने अद्भुत छटाओं से पर्यटकों का मन मोह लेता है। बनई नदी की पांच धाराओं से पांच छोटे तालाब बनते हैं, जिसको कोई भी झरने के रास्ते में देखा जा सकता है। ऐसा कहा जाता है कि महाभारत के पांडवों ने इन पांच तालाबों का उपयोग अपने निर्वासन के अंतिम वर्ष के दौरान खुद को छिपाने के लिए किया था।



झरने के नजारे को देखने के लिए मानसून और सर्दियों का मौसम सबसे अच्छा होता है जब सारी जलधाराएं अपने पूरे प्रताप में होती हैं। ऊँचाई पर जाकर आसपास क्षेत्र के सुंदर मनोरम दृश्य को देख सकते हैं। यहां लाखों की संख्या में सैलानी सपरिवार पिकनिक का आनंद उठाने आते हैं। सर्दी का मौसम आते ही इन पर्यटन स्थलों में सैलानियों की भीड़ जुटने लगती है। इसके साथ ही जिले के पर्यटन स्थलों में पर्यटकों का आना प्रारंभ हो गया है। यहां की प्राकृतिक सौंदर्य व मना-रेम छटा लोगों को बार-बार यहां आने के लिए आकर्षित करती है। कुछ साल पूर्व बनाया गया स्वीमिंग पुल

पर्यटकों को आकर्षित कर अंतिम माह व

रहा है। साल के नए साल में बड़ी संख्या में सैलानी पर्यटन स्थलों पर पिकनिक मनाते आते हैं,

कैसे पहुंचे और कहां ठहरे ?
प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक धरोहर की अमिट छटा देखने उतना ही मन लुभावन है। लेकिन अगर आप इस जगह आना चाहते हैं तो यातायात की व्यवस्था खुद का लेकर आना उचित होगा क्योंकि यहां तक किराये की वाहन से आने के लिए करीब तीन बार वाहन बदलना पड़ सकता है, और बात करें ठहरने की तो कोई सुविधा नहीं है।

इसलिए सभी पिकनिक स्थलों पर सुरक्षा की मुकम्मल व्यवस्था जिला प्रशासन की ओर से विशेष सुरक्षा व्यवस्था की जाती है।

यदि पर्यटकों की माने तो इस क्षेत्र के विकास के लिए पर्यटन विभाग के द्वारा प्रवेश शुल्क के रूप में 7 रुपया प्रति व्यक्ति, साथ ही मोटरसाइकिल के रखरखाव के लिए 12 रुपया अलग से लिया जाता है। लेकिन विकास के नाम पर नील है। केवल एक व्यू पॉइंट है जो विभाग के द्वारा बनाया गया है।

पंचघाघ की अच्छी बात यह कि हुंडरू या दशम जलप्रपात की तरह ऊंचा नहीं है। लेकिन जलप्रपात के आस-पास के क्षेत्र काफी आकर्षक हैं, मानो प्राकृतिक के सबसे महत्वपूर्ण अंग यही है। करीब 2 किलोमीटर के क्षेत्र में फैंला साल (सखुआ), बांस, और पलास के जंगल बीच में पंचघाघ, यही कारण है कि वनभोज की दृष्टिकोण से भी इस क्षेत्र को काफी सुंदर और सुरक्षित माना जाता है।

कविता

दौड़

दौड़ती भागती इस जिंदगी में
दौड़ रहे हैं हम सब
अंधी है यह दौड़
देख रहे हैं हम सब पर
मानेंगे कब?
अरे ठहरो दो पल
संग न हो कोई तो
सपनों के संग जी लो
भीड़ है बाहर बहुत
थोड़ा अकेले जी लो
अरे ठहरो दो पल
मिठास कम है जिंदगी में तो
थोड़ा मिठास डालो
थोड़ा नमकीन बन जाओ
तो कभी करेला बनो
आंसू तो है तुम्हारे अपने
अकेले में कभी
चुपके चुपके रो लिया करो
जहां अपने रुलाते हैं तड़पाते हैं
वहां उनके सामने
खुलकर हंस लिया करो
अरे ठहरो दो पल
जिंदगी से लम्हे कुछ
चुरा लिया करो
संग हो न हो कोई
सपनों संग जी लिया करो



अर्चना तिवारी
बरोड़ा, गुजरात

पीछे छूटता मेरा शहर

फिर से आज अपना शहर बेगाना हो गया
इक पल में सब कुछ पुराना हो गया
रेल गाड़ी में शाम से रात हो गई छ
पता ही नहीं चला कब रुकने से जाने की बात हो गई।

कल नए शहर में पहुंच तो जायेंगे
फिर से रूखा सूखा खायेंगे
घर की तो बहुत याद आयेगी छ
मन में बैचोनी भी छाएगी
घरवालों की याद भी सताएगी
फिर अचानक सबकी उम्मीदें कान में गूंज जाएगी
और एक बार फिर सब कुछ त्याग कर नई दुनिया बस जाएगी।



शम्मा बाला

मैं एक सैनिक

जगा रहूंगा दिन-रात
चाहे हो रेत की मैदान या हो बर्फ का पहाड़
चाहे आए तूफान या हो पूस की ठंडी रात
खड़ा रहूंगा सरहद पर सीना ताने
चाहे हो गोलियों की बौछार या हो बम की बरसात।

रूह न कांपेगा मेरा
लहू के कतरा-कतरा निछावर के समय
ये वतन की मिट्टी, जो इतनी सुगंधित है
कि मिल जाए मेरा लहू इस मिट्टी में
तो अफसोस न करूं देह निछावर के समय।

पहुंचा देना यह संदेश
इंतजार में बैठे, मेरे घरवालों को
ताकि गर्व से सीना तान सके
मेरे अंतिम यात्रा के समय।



जयकरण राणा

शुरूआत सपनों की

बारिश और तुम
बहुत मुश्किल काम है
ऐ बारिश
बारिश चाहता है



कृष्ण कुणाल

बता जरा मैं फिर हूँ बेहका
करो नई शुरुआत

शाम की लालिमा
आखरी बचे लम्हों में जीतें हैं

आदत ही छूट गई
चौंद से चाहत
दूर तुमसे रहा ना जाये
उसे आगे बढ़ना अच्छा लगता है
अब वो वक्त नहीं है
अलविदा मेरे हमसफर
मत पलटो पन्ने मेरी जिंदगी के

ऐ दिल समझ
समझने की कोशिश करो
तुम मुझे बहुत
बता मुझे क्यों

‘बचपन देखो’

कभी हम भी तो बच्चे हुआ करते थे ।
कभी हम भी तो बेवजह जिद्द किया करते थे ।।
कभी हम भी तो मनचाहें काम पूरा ना होने पर रोया करते थे ।
कभी हम भी तो चीजों को बर्बाद किया करते थे ।।

पर अब क्यों बच्चों की भावनाओं को नहीं समझते ?
बच्चों के जिद्द करने पर उन्हें डाँटा करते हैं ।
उनके रोने पर भी माँग पूरा करने के बजाय और ज्यादा रुलाया करते हैं ।
छोटे-मोटे चीजों के नुकसान पर भी बच्चों को मारा करते हैं ।

क्या अब तक हम किन्हीं के भावनाओं को समझने के काबिल नहीं हो सके हैं ?
या फिर हम कहीं और का गुस्सा बच्चों पर उतारा करते हैं ?

पर क्यों ? वो तो नादान हैं ।
उन्होंने तो अभी जानना शुरू किया हैं ।
फिर वो कैसे सही और गलत का फैसला कर सकते हैं ?

यूजीसी नेट में खोरठाक कइगो छउवइन के मिलल नेट आर जेआरएफ कर सफलता

राँची : राँची विश्वविद्यालय, राँची आर डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय, राँची कर कइगो छउवइन में रमेश कुमार महतो नेट जेआरएफ आर सुभाष चंद्र महतो व अशोक रजक के नेट कर मिलल बोड़ सफलता। आबरी ई सब असिस्टेंट प्रोफेसर खातिर चयनित होइ गेला । एकर से खोरठा साहितिक बिकास देइर सरगत साबित हेवत । आगु बड़ढ़ के ई आपन माय माटी मातरी भासा खोरठा में



रमेश कुमार
सिंहपुर, करमा
खोरठा भाषा विभाग राँची



अशोक कुमार रजक
पिता—साधु चरण रजक
जिला— बोकारो



सुभाष चंद्र महतो
करमा, सिंहपुर, कसमार, बोकारो
डीएसपीएमयू खोरठा नेट क्वालिफाइड करला

खोरठा से नेट/ जेआरएफ पास करला । डीएसपीएमयू राँची / खोरठा में नेट पास करला करता पीएच डी आर बनता प्रोफेसर। संगे ओखिन के झार न्यूज खोरठा परिवार छेतर में हुब हुलास मनवल जाइ रहल हइ आर डेइर लोके बधाई भी देला ।

Jeevansathi Production

Videography & Photography
Wedding Decoration
Video Mixing, Photo Editing & Album Designing
Live Broadcasting For LED, Facebook, Youtube, web etc

Contact :- 7717748632, 7004728414 | <https://www.facebook.com/jeevansathiproductions>



हजारी मील दूर ले उड़इ आइला बिदेसी चरयं

ई नावा परजाति ह्यूम्स शॉर्ट टो लार्क साउथ सेंट्रल एसिया कर देस ईरान, कजाकिस्तान आर चाइना में पावल जा हथ

ओम प्रकाश कुमार

हजारीबाग : जाड़ कर महीना आवे नाय पारल कि हजारी मील दूर ले बिदेसी चरयं (बिटर विजिटर बर्ड) हजारीबाग पोहचला । हजारीबाग के छड़वा डेम कर धारी उड़ते मिलल श्वेत खंजन और ब्राउन हेडेड गल नामक चरयं । पानी-कादो में निर्भर रहे वाला चरयं बुश आर ग्रासवर्ड कर जाती में ब्लू कैण्ड रॉक श्रेय, साइबेरियन प्ल एशियन ब्राउन लाई कैचर अक्टूबर के पहिल हप्ता ले आवेक सुरु भय गेल हथ। हियाँ कर लोग हामिन श्चरका(सफेद) खंजनश कर नाम से जानअ हियइ।

ई बर्ड के मानलें बगैरी कर ई परजाति के दुनिया भइर में लगभग 1100 बार करीब तीन हजार किलोमीटर उड़ते देखल गेल हइ।

एक बछरें एक बेर अइसन बिदेसी चरयं जाड़ेक



मास में हजारीबाग कर छड़वा डेम में देखेक मिलो हथ। जाड़ कर दिन सुरु भेल आर बिदेसी चरयं आवेक सुरु भय जा हथ आर जइसे-जइसे जाड़ कर दिन सिराय लागो हे कि सोब चरयं घुइर आपन-आपन देस

जाय लागो हथ जहां से आइल रहथ। आर नाय तो जोन देश में मौसम जाड़ जइसन रह हे वइसने जगह कर खोज में जाय लागो हथ। एखन करीब दु महिना हजारीबाग कर छड़वा डेम में देखेक मिलता । आस-पास कर लोग बतवो हथ कि ई बिदेसी चरयं देखे खातिर कतइ दूर-दूर ले सोखिन लोग आवो हथ।

खोरठा कविता

खोरठा के मान

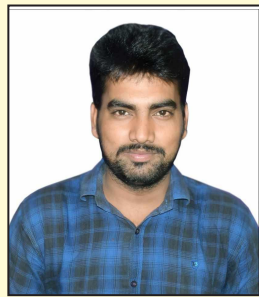
मान मान मान खोरठा के मान ,
एकर ले बोड़ नाय भाखा भेउ तोय जान....

एकर खातिर कते बुजूरुक जीवन जायर देलय ,
सोना रकम जीवन टा के माटी गुचाय देलय ।।
ओहे माटीक किरिया तोरा ओहे माटिक आन.....

मान मान मान खोरठा के मान.....

देख के एकर दुर्दशा जी हमर कांद हय ...
आवे वाला बरौंडय देख हिया हमर हांफ हय
पढ़ल लिखल छउवा सब काहे एकरा निगछा हो..
लायज नाय करिहा बाछा, हामनिक हके सान (खोरठा)

मान मान मान खोरठा के मान ,
एकर ले बोड़ नाय भाखा भेउ तोय जान....



प्रमात रंजन पाण्डेय

सुगवा

जखने अपन मुहा खोले हे
सुगवा बडी बेस बजको हे
सुगवा के होठ हे लाले -लाल
एकर देहियो हे हरियार
सरगे उड़ान भरो हे
कोय पकरेक ले
पिंजरा में डालय न देय
से लेय मनुखेक से डरो हे।

सुगवाक इसब गुन
छउवा बेरा मिलल हे
कखनो गछा लुकाय हे
कखनो पतये लुकाय हे
हमनीके मना बडी हरसा हे
जइसन खुसीक बरखा हे
कैकरो पियारे से
बोलो हथिन सुगवा अउर
सुगवा बने खातिर
बोलो पडे हे मीठ
मिठके बोली से दुनिया-दारी हे।

अउर हे अपन संसार
मिठका के गुन ददा
बचपने के संस्कार हे
बचपने के संस्कार हे।।



लिखवइया : नेतलाल यादव

कामचोरवा गिदर

कामचोरवा गिदरेक ठेकान नाज,
पडे कहले पढ़य नाज ।

बिहान भेल सझाय देलय,
कामेक डरे इसकुल गेलय,
इसकुले पहुँचल बडी लेट,
चापरासीय लागाय देल रहय गेट,
तावो दुकल फाँइद के बेड ।

इसकुलेक टास्क बनाव रहय नाज,
मासटरे देलइ दु पोइना बयसाय,
मासटरे कहलय, “अबरी आनबे बनाय”,
डरे कहलय, “आनबो बनाय” ।

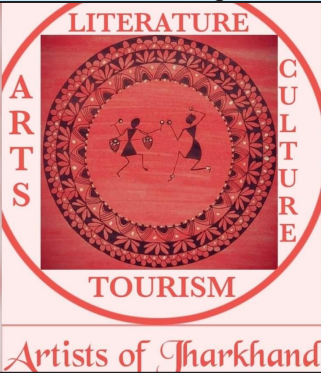
छुटी से पहिले घर गेलय भाइग,
घारे कोपी-किताप फेंडक देलय,
सान-सानाय के भात खाइल,
आर बइन गेलो ठेक।
चौडे-मुडे खेले भागलय ,
इसकुलेक काम भुलाय गेल।

खेलते-खेलते बितावलय साँझ,
घार आइल तो सुनलाय गाइर।
बापेक डरे पडे बइसल पेंदलाय,
कोनो रकम बितावलय समय आर,
खाय पीके आराम से सुतलय।

एहे तरी बितावय दिन-राइत,
एको तनी काम करय नाज,
काकरो बात सुनय नाज।
कामचोरवा गिदरेक ठेकान नाज,
पडे कहले पढ़य नाज।



लिखवइया : गौतम कुमार महतो



भेंट करेक हुबे (जातरा वृतांत)



संदीप कुमार महतो

अइसने बइरसाक दिन, कटि फरीछ हल मकिन पानी आर रउध कर कोन्हो ठांव ठेकान नाइ हलइ । बिहाने बिहान सुइत उइठ के कनकनी पानी लइ कोन्हो रकम नहाइ लो खाय लो आर मानिक के फोन करलिये । कहां हाय जी — हां हामे आइ रहल हियोन तोहर घर तोहिन तइयारे रहबाय । काहे कि आइज काल्हक मउसक के कोइ भरा. 'सा नाइ कखन जे देतो आर कखन छोइतो ताकर । खावा पि्या करले देरी भेतो सइ खातिर चल डहरें कहीं होटलें खाइ लेब । हामे — हां हां तोहिन आवा न हामे पिंघ ओइड़ के तइयार बइसल ही । माये कहल हली की बेटा खाइ लेबे आर काहुं जाबे । हामे कहली नाइ माय डहरें काहुं खाइ लेब । मानिक जी आइला आर दुइयो आपन किताब कोपी धरलें आर चइल देलें । एहे बगदा पार करइत करइत तनि मनी पानी शिमकाउ लागल , तखन इड़ाइ के आपन आपन बरसाती पिंघलें आर फइर सोझाइ देलें । कुछेक दुर गेलिये आर बाप रे एते जोर पानी दिये लागल । अइसने ठेर — ठेरी आर खुब गरजोबाइ तखन दुइयो एगो छांछा धाइरे इड़ाइलें । करीब करीब एक घंटा तक पानी देते रहल आर हामिन मने मन सोचलें आर की गुरुजीक घर जाइ पारबइ , के जान । मानिक त कहला — संदीप आबरी चले घर दोसर दिन जाब , हाम गुरुजीके फोन कइर दे ही । हाम कहलें नाइ दादा जखन घर ले बहराइल हिये तखन तखन त मिइल के घर घुख चाहे काहे नाइ साइंझ हवे पारे । काहे की गुरुजी के एगो आसा देल हिये की हामिन आइ

रहल ही । तकरो बादे ऊ सब कहलें हथ । आव नाइ त आर नाइ बाचबो । के जानो हो आइज जदि नाइ जाइ पारिये आर गुरुजीक कहना टा सच भइ जीतइ त मने एगो खुट खुटी रही जात । जखन बहराइल ही तखन त उनखर से मिइल के घर आइब । एहे सब बतियात बतियात पानी कुछो कम भेल आर हामिन गाडी स्टार्ट भेल । बहादुरपुर पहुंचा पहुंची पानी छुइट के रउद दिये लागल । तखन दुइयोक मन हरियाइ गेल । कहलिये आब त कुछो दिक्कत नेखो मानिक दा आब सनसनाइ के चल । मकिन हाय रे किसमत कर खेल हेना संजोग गाड़ीयें तेल गेल सिराइ । तखन आलो पाली कइर के गाड़ी धकले लागलें जब तक की पेट्रोल पंप नाइ पहुंचलें । बीचे त एतना खराप लागल जे नाइ पुछा एतना बेस बेस पिंघ के आर गाड़ी धकइल रहल हिये से । एहे धकलल धकलल कोन्हों रकम बारीडीह पेट्रोल पंप पहुंच के तेल भरवलें आर दुइयो चाइप के सोझाइ देलें । जैनामोड़ पइरात पइरात फइर पानी दियेक सुरु आब दियेक करल तखन खुब बोड़ बोड़ बुंदेक पानी बाप रे आर अइसने गरजोबाइ । तखन एगो छांछा धाइरे इडालिये हांलाकी पेंट सट त दुइयोक भींझ गेल हल मनतुक करबे की उपाय, जखन पानी भींझलिये भाइ । आर जायेक मन टा त दुइट गेल हलइ मनतुक । उनखर कहल बात इयाद घुइर घुइर आवो हल , आव नाइ त , चइल जीबो । एक दु घंटाक बादे पानी कम भेल । मन के मनावलिये आर अइसने में चइल देलिये । पानी गोटा गोटी त नाइ मकिन बुंदा बुंदा देते हलइ । अइसने मे चलते चलते नयामोड़ पहुंच गेलिये । जइसी चउक पइराइत पइराइत एगो आर फछका फंदा में फांइस गेलिये । मने सिपाही हमनिके धइर लेल । आर गाड़ीक

पेपर मांगे लागल । हेना संजोग पेपर त सब हल मकिन धुंगा परमिट सिराइ गेल हल । सिपाही पाइल दाव कहल आब त चलान काटबो आर नाइ त पइसा बहराव । कोन्हो रकम एक दु सो टाका दइ के छुकारा पइलें आर चइल देलें । तखन हमनिक संवय चाइर बइज गेल हल । कहां बिहाने बहराल आर चाइर बइज गेल । करब की उपाइ जखन गुरुजी के कहल ही कि गुरुजी हामिन आ. इबो जरूर तखन त जाये हेवत । चाहे काहे नाइ कतनो बोड़ फांदा हेवत । हेन तेन करइते कोन्हो रकम गुरुजीक घर पहुंचलें । गेट खटखटावलें भीतर ले , उनखर बेटा — के लागा? हामे दादा हामे हिये संदीप आर मानिक गुरुजी से मिलेक हे । आछा ठीक हइ आवो ही आर गेट के खोइल देला । आपन आपन बरसाती खोललें आर गुरुजीक ठांव गेलों दुइयो मिइल के गुरुजी जोहार हां जोहार । गुरुजी कहला बाबु जाब एतना पानी आवो हल तखन आवेक कि दरकार टेलीफोन कइर दे तले न । हामे की कहबोन गुरुजी तोहर से मिलेक आसे आर जे तोहें कहल हलाइ न की आव आइ के भेंट कइर ले आर नाइ त हाम नाइ बांचबो

एहे भाभी के हामिन दुइयो चइल देलिये । करीबन आठ बजे बहराइल हलें आर तोहर घर पहुंचते पहुंचते पांच बजल । गुरुजी — बाप रे बाप ई त असंभव जे बगदा ले बोकारो एक घंटाक डहरें आइज तोहिनेक नउ घंटा लाइग गेलो ई त भाभना करेक दरकार हइ । आछा पहिले तोहिन नासता आर चाइ पि्या तकर बाद कोन्हो बात चीत हतइ । आर बेसी देरी राखबो नाइ तो. हिन फइर घर घुरी जा । चाइ नासता करल बाद गुरुजी से एगो विडिओ रिकॉर्ड करलें फइर कहला तोहिन के माइन गेलियो तोहिन खोरठाक भभीस लागे , इटा हाम

जाइन गेलियो । तोहिन कर खोरठाक ऊपरे परेम आर लगाव टा जाइन के हिया जुड़ाइल । तोहिन तीन से खोरठाक ढेइर आसे हे , आर खोरठा के एगो सकत बनवे में तोहिनक ढेइर जोगदान दिये हेतो । एकरा कहल जाइ त जेटा मने ठाइन लेहे मानुस उटा कइर के पुरावे हे । चाहे काहे नाइ कतनो बोड़ फांदा आवे ओकर से कोय मतलब नाइ । आरो ढेइर गफ साइा भेल तकर बाद हामिन गुरुजी से आसिरबाद लेली आर घर सोजाइ देलिये । गुरुजीक घारे साइज होइ गेल हल । गुरुजी कहल हला कि रूका जखन सांइज भेल हो तखन खावा दावा कइर के जिबाइ मनतुक हामिन उनखर बात काइट के घर सोझाइ देलें घर । कहल हलें की गुरुजी एखन त नाइ खाबो हामनिक घरे खाना बनल हतइ । हामनिक राइत भेतइ से हामिन जाब । घर घुरइते राइत भेल । हमरा छोइड़ के मानिक घर गेल । कइसन संजोग कि हामर घारेक लोक सोंचला की एतना राइत भेल हइ त कधी ले खायके आवल हेताइ न सइ खातीर घारे खाना सिराइ गेल हलइ आब पानी के राइत काटलें । बिहाने बिहाने मानिक कर टेलीफोन आइल की संदीप काइल त गजब भइ गेल गुरुजी कहल हला खाइले मकिन हामिन खायलें नाइ आर हामर घरहुं खाना सिराइ गेल हल तखन की पानी पी के सुतलो । हामे कहलो, की कहबो मानिक दा हमरो ओहे हाल जे तोर हलो । एहे खातीर कहल गेल हइ जे बिहानेक पहिल खाना आर सांजेक पहिल खाना के मना करेक नाइ चाही आर नाइ त बिहाने काटले गोटा दिन आर सांजे काटले गोटा राइत भुखे रहबे ।

भारतें 20 नवम्बरेक बदले 14 नवम्बर के मनवल जाहे छउवा दिवस (बाल दिवस)

मुख्य बात :

- पहिल 20 नवम्बर के मनवल जा हल छउवा दिवस
- 1964 कर बादे 14 नवम्बर के मनवल जाइ लागल छउवा दिवस ।
- 14 नवम्बर के दिन पंडित जवाहर लाल नेहरू जी जनम लेल हलथ आर उनछा छउवा से खास लगाव हल ।

भारतेक इतिहासे वइसन त पइत दिनेक आपन अलगे महत हइ । जे नियर देसे आजादी के हुब हुलासे संगे मनावल जाहे वइसने 14 नवम्बरेक दिन खास हइ । 14 नवम्बर कर दिन ई खातिर खास हइ काहे कि ई छउवाक खातिर समरपित हे आर ई दिन छउवा दिवसेक रुपे जानल जा हे । मँतुक 1964 से पहिलेक छाप अलगे रहे । संयुक्त राष्ट्र ने 20 नवम्बर कर तारिखे छउवा दिवस कर रुपे मानेक टा तय करल गेल आर भारत में हू उहे दिन छउवा दिवस कर रुपे इयाद करल जाइ रहल हे । मेन्तुक 1964 कर बादे छाप बदलल । नाम त छउवा दिवस हो रहल मेन्तुक तारिख 20 नवम्बर से बदइल के 14 नवम्बर राखाइल गेल । ई खास दिने छउवाक खातिर इसकुले सरंजामों करल जाइ रहल हे । 14 नवम्बर के जवाहर लाल नेहरूक हेल हलइ जनम । 14 नवम्बर 1889 के उत्तर प्रदेशेक इलाहाबादे जवाहर नेहरू जीक जनम हेल हे आर उनखर छउवाक संगे एगो अलगे लगाव हल । नेहरू जी पइत बेरा कहइते रहयतला कि छउवा सब काइल कर अधिकारी लागथ,

बइग्यानिक लागथ, साहितकार लागथ, नेता, अभिनेता हथ सइ खातिर छउवाक संगे कोन्हो रकमेक आनयिन नाज हवेक चाही । छउवइन पइत बेरा लगाइ कि कोइ ओकर खेयाल करे वाला हे । समृध्द बा हुब हुलास देसेक खातिर छउवइन के गात आर मगजेक रुपे जुइतमार बनवेक संगे-संग संवेदनसीलो बनवेक हतइ ।हमरा ऊ सब के अइसन माहोल दियेक हतइ ताकि ऊ आपन गोड़े इड़ाइ सके हे । खास बात ई हलइ कि पंडित जवाहर लाल नेहरू जी छउवइन के जोन ह द त इ क छउवइन के पसींद करइत रहला । ओकर से काहू बेसी छउवइनों ओकरा पसींद करो हला । भारतेक संसकीरति में कहल जाहे कि हामे जेतना सम्मान बा परेम दोसर से कर हिये ओतने सम्मान आर पियार फेर मिइल जाहे आर एहे बोड़ कारन रहे जेकर से छउवइन श्चावा नेहरूश कहिके हकवो हलथ । भारते छउवा दिवस के 20 नवम्बर कर बदले 14 नवम्बर के काहे मनावल जाहे ।

20 नवम्बर कर दिने भारतेक इतिहास में खास हलइ काहे कि ऊ दिने छउवइन कर नामे समरपित रहल । ई कहल जाइ त छउवा दिवस मनावल जाइ लागल । 1964 से पहिले इयानी जवाहर लाल नेहरू जी सिराइल

बाद उन खार स म मान खातिर

बाल दिवस

भारतेक तारिख बदलल। आर 14 नवम्बर के छउवा दिवस मनवेक परंपरा लगस्तर चलइत रहल । मेन्तुक दुनियांक कइगो अइसनो देस हथ जहां 20 नवम्बरेक जगहें 1 जून के छउवा दिवस मनवल जाह हे । 1 जून के ताजिकिस्तान, इथीयोपिया, मकाऊ, म्यांमार, पोर्लेड, रूस, पुर्तगाल, यूक्रेन आर वियतनाम समेत 47 गो देस छउवा दिवस मनवल जाहे । **छउवा दिवस कर ई महत (Importance of Children's Day)** छउवा दिवस पंडित जवाहर लाल नेहरू जीक सरधांजली अरपित करेक संगे संगे छउवइन के अधिकार मनवल पढ़ाइ क लइके बिसेस फिकिर करल जाहे । अइसन मानल जाहे कि देसेक बिकास ऊ छउवइन के भभिसें टिकल हइ ।